॥ सुयं मे आउसं ॥

श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

विक्रम संवत २०७६ • वर्ष : ४ • अंक : २ • अक्तूबर २०२०

कोरोना और हस्तप्रतों की सुरक्षा : सहचिंतन

प.पू. गणिवर्य श्री वैराग्यरतिविजयजी म.सा.

आज समूचे विश्व में कोविड-१९ नामक रोग का भय छाया हुआ है। इसके उद्रेक से निपटने के लिए प्रत्येक देश अपनी-अपनी क्षमता से डटे हुए हैं। ऐसी समस्या का मुकाबला करने के लिए प्रत्येक देश के पास अपनी अपनी सक्षम व्यवस्था, सक्षम तत्परता और सक्षम स-सूत्रता तो होती ही है, मगर इस वैश्विक आपदा के सामने सभी देशों के बीच परस्पर सहयोग के साथ समावेशकता भी होनी चाहिए। ऐसा नहीं है कि कोरोना विषाणु के विषय में विज्ञान को बिलकुल जानकारी नहीं थी। जानकारी थी, लेकिन सर्वसमावेशक दृष्टिकोण के अभाव से समय पर जानकारी उपलब्ध नहीं हुई। और विज्ञान कुछ समझे या करें इसके पहले ही कोरोना ने तीव्र गति से समुचे विश्व को अपनी चपेट में ले लिया।

विषाणुओं को लेकर लंबे समय से विश्व में अनेक संशोधन होते रहे हैं, मगर इनमें अनेक देशों के निष्कर्ष कई बार संदेहशील और भ्रामक भी रहते हैं। कोविड-१९ के संदर्भ में तो असंख्य सच्ची-झूठी जानकारियां प्रसारित हुई है और हो रही है। कोरोना के भय से लिपटी अनेक जानकारियों का प्रचंड उद्रेक भी हुआ है। ऐसी उडती खबरों को **मेसिव्ह इन्फोडेमिक** कहा जाता है। (Massive Infodemic - प्रचंड जानकारियों की उपलब्धि)

प्रायः ऐसे संशोधनों की प्रचंड जानकारियां परस्पर अन्य देशों के हाथों तक पहुंच ही नहीं पाती हैं। इसके पीछे प्रत्येक देश के निजी आर्थिक हित छिपे होते हैं। प्रत्येक देश अपनी शोध प्रक्रिया और परिणाम को छिपाकर गुप्त रखना चाहता है। इस कारण आपात स्थितियों में उन उपलब्धियों की जानकारी योग्य जगह पर और योग्य समय पर पहुंच नहीं पाती है। फल स्वरूप मनुष्य जगत को भारी नुकसान उठाना पडता है। सच्ची-प्रामाणिक जानकारियों के अभाव में अधूरी जानकारियां पैर पसारने लगती है, जो सबसे ज्यादा खतरनाक है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर **नेचर** नामक एक आंतरराष्ट्रीय स्तर की शोधपत्रिका ने बहुत ही स्वागत योग्य कदम उठाया है। **नेचर** के प्रकाशकों ने विश्व की प्रमुख शोध पत्रिकाओं के प्रकाशकों से विचार-विमर्श करते हुए, कोविड-१९ जैसे रोग संबंधी शोध निबंधों को त्वरित मुक्त रूप से सबको परस्पर उपलब्ध करवाने के लिए सहमत किया। यह सहमति व्यापक स-सूत्रता और समन्वय को मजबूत बनाने में कामयाब हुई है। तमाम शोध निबंधों की जानकारी विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) तक पहुंचाने की जिम्मेदारी भी **नेचर** पत्रिका ने उठाई है। इस एकजूट प्रयास ने विश्व के संशोधकों के उत्साह और ऊर्जा को सटीक दिशा दी। सर्वसमावेशक शोध प्रक्रिया को गति भी मिली। वैज्ञानिकों को सूचना दी गई कि, वे अपनी-अपनी जानकारियों को अन्य संशोधकों से साथ साझा करें और परस्पर विचार-विमर्श को व्यापक बनायें, ताकि सच्चा विश्लेषण संभव हो सके।

विश्व में अनेक वैज्ञानिक शोध-निबंध समय समय पर प्रगट होते रहते हैं। इनके प्रकाशन की लंबी प्रक्रिया होती है। अनेक स्तरों पर इनका परीक्षण निरीक्षण होता हैं। **नेचर** ने सूचना की है कि, वैश्विक आपाद स्थितियों में रोगप्रतिबंधक उपायों के लिए ऐसे शोध लेखों की प्रकाशन पूर्व जानकारी परस्पर एक-दूसरे तक पहुंचनी चाहिए। इस परस्पर संवाद से शोध के निष्कर्ष सर्वंकष सिद्ध होंगे। कोविड-१९ के विषय में **नेचर** का दृष्टिकोण विश्व के हित में काफी व्यापक और अर्थपूर्ण सिद्ध हो रहा है।

शोध-समन्वय की उपरोक्त पृष्ठभूमि में यह घटना हमें प्राचीन हस्तप्रतों की बिखरी व्यवस्था पर विचार करने के लिए भी विवश करती है। हमें पता है कि हमारी प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियों का बडा गौरवशाली इतिहास है। अद्भुत परम्परा का वह महान ज्ञान, प्रचुर मात्रा में हमें विरासत में मिला है। कालांतर में अनेक अव्यवस्थाओं और परिस्थितियों के कारण उसका बहुत बडा हिस्सा, हमसे छिन भी गया। फिर भी आज हमारे श्रीसंघ के पास लाखों की संख्या में हस्तप्रतियां उपलब्ध हैं। मगर दुःखद स्थिति यह है कि, परस्पर समन्वय के अभाव के कारण उनका आज तक संपूर्ण और समुचित सूचीकरण (दस्तावेजीकरण) तक नहीं हो पाया है। यह बात कुछ वैसी ही है, जैसे किसी व्यक्ति की संतानों को अपने पूर्वजों की दौलत तो विरासत में मिल गई, मगर उस दौलत का कागजी ब्यौरा कुछ किसी के पास है, तो कुछ किसी अन्य के पास है। ऐसी स्थिति में कोई भी उस धन का फायदा नहीं उठा पा रहा है। कदाचित एक दिन ऐसा भी आयेगा कि उस दौलत के बिना उसका जीवन ही रुक जायेगा। हस्तप्रतों को ऐसी गुमनामी से बचाकर बाहर लाना जरुरी है।

हस्तप्रतों की वर्तमान दुरवस्था के पीछे अनेक कारण हैं। कुछ व्यक्तिगत हैं, कुछ संस्थागत हैं। मुख्यतः व्यवस्थापन में दुर्लक्षता और उपयोगिता में निष्क्रियता के कारण यह अनमोल विरासत आज नष्ट होने के कगार पर खडी है। व्यवस्थापकों के अंतर्गत मतभेद और घोर उदासीनता के कारण अनेक भंडारों पर ताले पडे हैं। वहां धूल खाती ये पांडुलिपियां दीमकों का भोजन बन रही है। प्रतिवर्ष बेशुमार प्रतियां इस तरह नष्ट हो रही है। **कितना अच्छा होगा कि, वैज्ञानिक शोध पत्रिका नेचर जैसी पहल के साथ, वैसा ही अनुराग रखते हुए, भारत का समूचा श्रीसंघ एकजूट होकर, हमारी प्राचीन ज्ञान-संपदा के रक्षण और संवर्धन के लिए खुले मन से आगे आये।** समय रहते यह निर्णय लेना होगा, वरना यह कहावत चरितार्थ हो सकती है-

अब पछताये क्या भया, जब चिडिया चुग गई खेत।

कोरोना वायरस से इंसान की जान बचाने के खातिर, दुनिया के तमाम संशोधक अपने व्यक्तिगत लाभ को दरकिनार करके एक मजबूत समन्वय बना सकते हैं, तो क्या वैसा ही समन्वय हमारा समग्र श्रीसंघ श्रुतज्ञान के खातिर तैयार नहीं कर सकता है? वह ज्ञान तेरा-मेरा का संकुचित दरवाजा तोडकर क्या भविष्य की अनेक पीढीयों के काम नहीं आ सकता है? या फिर हम किसी कोरोना वायरस जैसे बडे उद्रेक की राह देख रहे है, जिसमें एक साथ हजारों-लाखों की संख्या में हस्तप्रतियाँ नष्ट हो जाएं? क्या हस्तप्रतियों में छिपा हुआ यह श्रुतज्ञान हमारे विद्वानों की दृष्टि तक आने से पहले ही मर जाएगा?

ये और ऐसे अनगिनत सवाल हमारे सामने कठिनाईयों के बडे-बडे पर्वत लेकर खडे हैं। हस्तलिखित प्रतों की सुरक्षा का रास्ता सरल नहीं है। पहला मुद्दा तो यह है कि, इस क्षेत्र में संशोधन करने वाले अधिकारी महात्मा, योग्य विद्वान एवं सक्षम संगठित संस्थाओं की संख्या मात्र अंगुलियों पर गिने जाने जितनी ही हैं। इन गिने-चुने विद्वानों एवं संस्थाओं के बीच परस्पर संवाद और समन्वय नही है। परस्पर आदान-प्रदान की परंपरा के अभाव से अनेक लोगों के लिए यह क्षेत्र अब शुष्क हो गया है। दूसरी कठिनाई यह है कि, संभवतः कुछ लोगों के मन में ऐसा भय भी है कि, उनके हाथों की चीजें सार्वजनिक हो जाने से, उस पर से उनका एकाधिकार समाप्त हो जायेगा। एकाधिकार (मोनोपोली) की यह समस्या इस क्षेत्र की बडी बाधा है। सामान्य लोगों की रुचि का अभाव भी खटकता है। यह भी अंदेशा है कि, सामान्य लोगों तक यह विषय कदाचित् पहुंच ही नही पाया है। अधिकृत और विशिष्ट वर्ग की निष्क्रियता के बोझ के कारण श्रुत-संवर्धन बडे अभियान का रूप नही ले पा रहा है। यह ठहरी हुई सुन्न अवस्था, परमात्मा के प्रति अवमान जैसी लगती है।

हस्तप्रतों का भविष्य, वर्तमान के हाथों में है। भूतकालीन अनुभव का उदाहरण हमे पता है, जिसके हाथों से श्रुत का बडा हिस्सा तबाह होकर चला गया। कोरोना वायरस आज बिना बताये आ गया, मगर पूरा विश्व उससे मुकाबला करने के लिए एकजूट हो गया, वर्तमान के लिए भी और भविष्य के लिए भी। हस्तप्रतों का संकट हमें खुली नजरों से दिखलाई दे रहा है। मगर हम अपने पास उपलब्ध सामर्थ्य का उपयोग ही नही कर रहे है। क्या हम किसी बडे संकट की राह देख रहे है?

श्रुतउद्धार के उपक्रम को गतिशील बनाने के लिए हमें सर्वसमावेशक एवं समर्पण भाव की आवश्यकता है। श्रीसंघ के सभी घटक अपनी-अपनी क्षमताओं का सदुपयोग करें। इन क्षेत्र में कार्यरत विद्वान् एवं संस्थाएं अपने पास उपलब्ध हस्तप्रतियों को एक दूसरे के संग शेअर करें। सर्वमान्य नियमावली के साथ उपलब्ध प्रतियों के समुचित सूचिपत्र बनें। भंडारों में स्थित प्रतों की सुरक्षा की समुचित व्यवस्था हो। विद्वान् वर्ग शोध के क्षेत्र को व्यापक बनाने में आगे आयें। सर्वसामान्य जनों को श्रुत का इतिहास, श्रुत की महिमा एवं श्रुतसेवा के कर्तव्यों से परिचित करायें। इन सबकी सहभागिता से ही हमारी अनमोल विरासत का स्वर्णिम भविष्य तैयार होगा।

विज्ञान के प्रयास द्वारा कोरोना से तो शरीर बच जायेगा। मगर शरीर में बैठी आत्मा की चिन्ता करने वाले श्रुत को कौन बचायेगा? किसी के पास जवाब है? यदि आप को यह चिंता एक प्रतिशत भी जायज लगती है तो कृपया आपका अभिप्राय और सुझाव खुलकर समाज के सामने रखे। लिखकर भेजे, हम विचारकों के सामने रखेंगे। समय रहते हुए हम नहीं जागे तो भविष्य हमें माफ नही करेगा।

-(मूल गुजराती लेख का हिंदी अनुवाद - ओमजी ओसवाल)

सूचिपत्र : श्रुतसंपदा की सुरक्षा का प्रथम सोपान

-डॉ. जितेंद्र बी. शाह

आज भारत वर्ष में जैन संघ के उत्तरदायित्व में चारसौ से अधिक हस्तलिखित शास्त्रसंग्रह हैं। बहुत सारे हस्तलिखित ज्ञानभंडार सुरक्षा के अभाव में या उपेक्षा के कारण नष्ट हो गए हैं। व्यवस्थापकों ने अज्ञानवश बहुत सारे हस्तलिखित ज्ञानभंडारों को विसर्जित भी कर दिया है। जो बचे हैं वह भी व्यवस्थित नहीं हैं। उनके सूचिपत्र ही उपलब्ध नहीं हैं। यदि हैं तो अव्यवस्थित अपूर्ण और अधूरे हैं। सांप्रदायिक और संकुचित मनोदशा के कारण हस्तप्रतों की अथवा सूचिपत्र की कॉपी भी मिलती नहीं हैं। इसलिए इतनी मेहनत से लिखा हुआ ज्ञान बिना वजह नष्ट हो रहा है। बहुत सारे विद्वान महात्मा हस्तलिखितों का संपादन और संशोधन करना चाहते हैं, किंतु सूचिपत्र के अभाव में उन्हें सही माहिती उपलब्ध नहीं हो रही है। इस समस्या का यही समाधान है, कि प्रत्येक संस्था अपने संग्रह का शुद्ध, संपूर्ण और उपयुक्त सूचिपत्र बनाकर प्रकाशित करें।

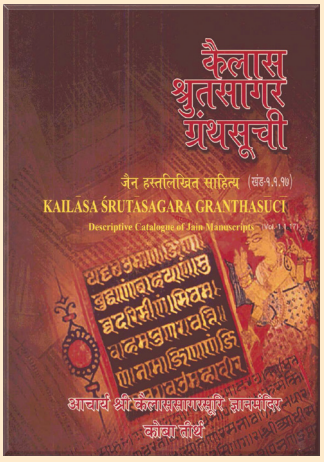

सूचिपत्र प्रकाशित करने से हस्तप्रतों का दस्तावेजीकरण हो जाता है। यह भविष्य के लिए अति उपयोगी संदर्भ सामग्री बन जाती है।

सूचिपत्र प्रकाशित करने से संशोधक महात्माओं एवं विद्वानों को हस्तप्रत की माहिती उपलब्ध होती है। संशोधक को हस्तप्रत उपलब्ध कराने से ज्ञान का बहुत ही विशेष लाभ मिलता है। सूचिपत्र प्रगट करने के पांच महान लाभ होते है ।

१) आज तक अप्रगट शास्त्र पहली बार प्रगट होते है।

२) प्रगट आवृत्ति में अशुद्धियां रह गई हो तो दूर होती है।

३) अनेक प्राचीन संदर्भ उजागर होते हैं।

४) पूज्य महात्माओं को ज्ञान दान में सहाय करने का बडा पुण्य मिलता है।

५) उससे विपुल प्रमाण में ज्ञानावरण कर्म की निर्जरा होती है।

आज बडी बडी सरकारी संस्थाओं में भी जैन हस्तप्रत उपलब्ध हैं। उनके अच्छे विवरणात्मक सूचिपत्र उपलब्ध है। उसके कारण वहां से हस्तप्रतियां मिलनी आसान होती है। श्री जैसलमेर जैन ज्ञानभंडार (७,४६०), आ.श्री हेमचंद्राचार्य ज्ञानमंदिर, पाटण (२५,५००), लालभाई दलपतभाई संस्कृति विद्या मंदिर, अमदावाद (एक लाख हस्तप्रत), आ.श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा (दो लाख हस्तप्रत), श्री रंग-कनक-विमल ज्ञानमंदिर मालवाडा (१,२३६), जैसी जैन संस्थाओं के सूचिपत्र उपलब्ध है। परंतु श्रीसंघ हस्तक संस्थाओं के सूचिपत्र प्रकाशित नहीं है। अधिकांश संघ के हस्तप्रतों का व्यवस्थित सूचिपत्र नहीं बना है। कुछ संस्थाओं ने तैयार किया है परंतु उसमें सूचीकरण के नियमों का (Cataloguing) पालन नहीं किया गया है। और उसकी एकमात्र प्रति उस संघ में किसी एक ट्रस्टी के पास रहती है। जो कभी समय पर उपलब्ध नहीं होती।

पिछले १०० वर्षो में हमारे अनेक जिनमंदिरों के जीर्णोद्धार संपन्न हुए हैं। परंतु हमारे सात सौ (७००) से अधिक भंडार की ८० लाख हस्तप्रतें नष्ट हो गई हैं। बचे

हुए हस्तलिखित ज्ञानभंडारों की २० लाख हस्तप्रतों का जीर्णोद्धार करना अभी भी शेष है। सुरक्षा के अभाव में हमारी ज्ञानसंपदा नष्ट हो रही है। उसे बचाने के लिए हमे आज ठोस कदम उठाने होंगे। अन्यथा यह विरासत भी कालशेष हो जाएगी।

आप सोचिए आपकी दुकान में बहुत सारा माल पडा हुआ है। लेकिन उसका स्टोक रजिस्टर नहीं किया जाता। कौन-सा माल कहां है? कितना है? कैसा है? इन बातों का किसी को पता नही है तो क्या होगा? पहले तो कोई ग्राहक आएगा तो उसे अपेक्षित माल मिलेगा नहीं। परिणामतः ग्राहक दूसरी दुकान पर चला जाएगा। धंधे का नुकसान होगा। दुसरा, वह माल वहीं पडा पडा सड जाएगा। मुनाफे का भी नुकसान और मिलकत का भी नुकसान। तीसरा, अगर माल वहीं से चोरी हो गया तो पता नहीं चलेगा। इन सभी बातों का परिणाम यह होगा कि धंधा घाटे में जाएगा। दुकान में स्टोक मेन्टेइन न करने से जो नुकसान होते हैं वही नुकसान हस्तप्रतों के **सूचिपत्र नहीं बनाने से होते हैं। सूचिपत्र भगवान ने दिए हुए रत्नों का स्टॉक रजिस्टर है।** दुकान में माल खराब हो जाए या खत्म हो जाए तो नया बन सकता है लेकिन एक हस्तप्रत भंडार खत्म हो जाएगा तो वापस नहीं बनता है। १३ फरवरी २०१३ के दिन पूज्य आचार्य **श्रीहर्षसागरसूरिजी** महाराजने श्रुतभवन द्वारा आयोजित तेरह नवसंपादित शास्त्रों के संघार्पण समारोह में कहा था कि,

"एक जिनालय या एक मूर्ति नष्ट हो जाएं तो वह नयी बन सकती है, किंतु एक शास्त्र नष्ट हो जाएं तो वह नया नहीं बन सकता। उसे वापस बनाने वाला इस दुनिया में कोई नहीं है।"

सूचिपत्र बनाना हस्तप्रतों की सुरक्षा के लिए अति आवश्यक है। हमारे पूर्वाचार्यों ने लाखों की संख्या में हस्तप्रतियां स्वयं लिखी और लिखवाई ताकि आनेवाली पीढी उसे पढकर अपना ज्ञान निर्मल कर सके। इन्हें तिजोरी में ताला लगाकर बंद रखने के लिए नहीं लिखा गया है। ये हीरे-जवाहरात नहीं है, यह जीवंत ज्ञान है। और **ज्ञान तभी जीवंत रहता है जब वह पढा जाता है।** बीज तिजोरी में नहीं, धरती में जीवंत रहता है। **श्रुतज्ञान भंडारो में नहीं, महाराज साहब के मस्तिष्क में जीवंत रहता है।** हमारा कर्तव्य है कि यह विरासत उस के सही अधिकारी गुरु भगवंत तक पहुंचे। अगर हम यह नहीं कर रहे है तो शायद हम तीर्थंकरों का, पूरी आचार्य परंपरा का और श्रुत परंपरा का द्रोह कर रहे हैं। यह

श्रुतभवन हस्तलिखित शास्त्रसंग्रह, पुणे — कृति की अनुक्रम अनुसार सूचि

अ.नं.	हस्तप्रत क्र.	ग्रंथनाम	मूल कर्ता	टीका कर्ता	भाषा	कु.पत्र	उप.पत्र	पू.ता	ले.वर्ष	रिमार्क	विषय
१	०००१	गति-आगति बोल आदि	अज्ञात		मा.गु.	९	१-९	पु.	१८८०		तत्त्व.
२	०००२	चोवीसजिन गर्भकालमान यंत्र	अज्ञात		मा.गु.	१	१	पु.		कोष्टक कृति।	तत्त्व.
३	०००३	चोवीसजिन मातापितादि नाम वर्णन	अज्ञात		मा.गु.	३	१-३	पु.		कोष्टक कृति।	तत्त्व.
४	०००४	चतुर्विंशतिजिन नमस्कार	अज्ञात		सं.	१	१	पु.			स्तोत्र
५	०००५	चोवीसजिन कल्याणक तिथि	अज्ञात		मा.गु.	१	१	पु.			तत्त्व.
६	०००६	चोवीसजिन आयुमान	अज्ञात		मा.गु.	१	१	पु.		कोष्टक कृति।	तत्त्व.
७	०००७	समकित विचार	अज्ञात		मा.गु.	१	१	पु.	१८८७		तत्त्व.
८	०००८	पाक्षिक अतिचार	अज्ञात		प्रा.+मा.गु.	८	१-८	पु.			आचार
९	०००९	श्राविका अतिचार	अज्ञात		प्रा.+मा.गु.	४	१-४	पु.			आचार
१०	००१०	पुण्य कुलक सह टबार्थ आदि	अज्ञात	अज्ञात	प्रा., मा.गु.	४	१-४	पु.			उप.
११	००१०/पे.१	पुण्य कुलक सह टबार्थ	अज्ञात	अज्ञात	प्रा., मा.गु.		१अ-२अ	पु.			उप.
१२	००१०/पे.२	गौतम कुलक सह टबार्थ	गौतम ऋषि	अज्ञात	प्रा., मा.गु.		२अ-४ब	पु.			उप.
१३	००११	संथारा विधि	अज्ञात		प्रा.	२	१-२	पु.			आ. आव.
१४	००१२	सिद्ध पंचदश भेद आदि	अज्ञात		मा.गु.	१	१	पु.			तत्त्व.
१५	००१३	धन्ना-शालिभद्र सज्झाय	सहजसुंदर		मा.गु.	१	१	पु.			उप.
१६	००१४	भरतराजेश्वर सज्झाय आदि	इंद्र ऋषि शिष्य		मा.गु.	१	१	पु.			उप.
१७	००१४/पे.१	भरतराजेश्वर सज्झाय	इंद्र ऋषि शिष्य		मा.गु.		१अ-१अ	पु.			उप.
१८	००१४/पे.२	अडमुत्ता सज्झाय	कान्ह		मा.गु.		१अ-१ब	पु.			उप.
१९	००१५	सुदर्शनसेठ सज्झाय	प्रेम मुनि		मा.गु.	१	१	पु.			उप.
२०	००१६	सप्तवंधव सज्झाय	कविषण		मा.गु.	१	१	पु.			उप.
२१	००१७	सुभाषित	अज्ञात		सं.	१	१	पु.			सुभा.

ज्ञान संपदा हर एक अधिकारी गुरु भगवंत तक पहुंचे इसलिए सूचिपत्रों का मुद्रण होना जरूरी है।

शुद्ध, संपूर्ण और उपयुक्त सूचिपत्र बनाने के लिए हस्तप्रतों की Scan Copy आवश्यक होती है। Scan करने का सब से बडा फायदा यह है कि यदि किसी कारणवश मूल प्रति नष्ट भी हो जाएं तो उसमें लिखा हुआ ज्ञान जीवित रहता है। आदान-प्रदान में सुविधा होती है। मूल हस्तप्रत को बिना नुकसान पहुंचाएं कार्य कर सकते है। स्केन कोपी के आधार पर सूचिपत्र बनाना आसान होता है।

सार रूप में यह कहा जा सकता है कि श्रुतसंपदा की रक्षा के लिए तीन प्राथमिक कार्य अति आवश्यक है-

१) श्रुतसंपदा (हस्तप्रत) की सुरक्षा का प्रबंध।
२) श्रुतसंपदा का सूचीकरण
३) श्रुतसंपदा की सूचि का प्रकाशन

श्रुतभवन पिछले दस वर्षों से इस क्षेत्र में कार्यरत है। श्रुतभवन के माध्यम से

आज तक लगभग ५० हस्तप्रत भंडारों की ६०,००० डिजिटाइज्ड हस्तप्रतों का सूचिपत्र बन चूका हैं। श्रुतभवन ने २०० मुद्रित और २०० अमुद्रित सूचिपत्रों का संग्रह किया है। इन सूचिपत्रों में करीबन ४ लाख हस्तप्रतों की माहिती उपलब्ध है। सूचिपत्र बनाने के लिए अंतरराष्ट्रीय मानक उपयोग में लिये जाते है। श्रुतभवन द्वारा निर्मित सूचिपत्रों में कुशल पंडितजी द्वारा एंट्री की जाती है। श्रुतभवन द्वारा निर्मित सूचिपत्रों की माहिती में युनिफोर्मलिटी होती है। श्रुतभवन द्वारा निर्मित सूचिपत्रों की माहिती सटीक होती है। श्रुतभवन द्वारा निर्मित सूचिपत्रों में अलग अलग सात प्रकार से Search करने की सुविधा होती है। इस प्रकार से मुद्रित सूचिपत्र अधिकारी गुरु भगवंतों के लिए बहुत सहायक साबित होते हैं। श्रुतभवन चाहता है कि यह माहिती सभी अधिकारी गुरुभगवंतों को आसानी से उपलब्ध हो।

श्रमण प्रधान सकल श्रीसंघ से हमारा विनम्र अनुरोध है-

१) यदि आप किसी भी हस्तलिखित ज्ञानभंडार के विषय में जानकारी रखते हैं तो कृपया हमें अवगत कराएँ।
२) श्री संघ को हस्तलिखित प्रतों की महत्ता समझाकर प्रतों को सुरक्षित करने का प्रबंध करने की प्रेरणा करें।
३) यदि आपके हस्तप्रत संग्रह का सूचिपत्र नहीं है अथवा सुयोग्य एवं उपयोगी नहीं है तो उस का परिपूर्ण सूचिपत्र निर्माण करने का लाभ श्रुतभवन को अवश्य दें।
४) सभी संघ को सूचिपत्र बनाकर प्रकाशन करने की प्रेरणा करे।
५) हस्तप्रतों की Scan Copy करने की प्रेरणा करें। हस्तप्रतों की Scan Copy करने का लाभ श्रुतभवन को अवश्य दें।

समाचार

पूज्य गुरुदेव की निश्रा में पर्युषण पर्व भक्तिमय वातावरण में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

दि. २८-०८-२०२० के दिन श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर में पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति में द्वारशाख प्रतिष्ठा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

कार्यविवरण

शास्त्र संशोधन प्रकल्प अंतर्गत **लोकप्रकाश, पृथ्वीचंद्रचरित्र, अरिष्टनेमिजिनचरित्र, वृत्तरत्नाकर सह टीका, ऋजुप्राज्ञव्याकरण, नवतत्त्वप्रकरण सह टीका** एवं **छंदोरत्नावली** का संपादन कार्य प्रवर्तमान है।

पू. सा. श्री **मधुरहंसाश्रीजी म.** **प्रदेशी राजा चरित्र** का लिप्यंतर कर रही है। पू. सा. श्री **धन्यहंसाश्रीजी म.** **पर्युषणचिंतामणि प्रकरण सह टबार्थ** का लिप्यंतर कर रही है।

वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प अंतर्गत पू. आ. श्री **मुनिचंद्रसू.** म.सा., पू. आ. श्री **हेमवल्लभसू.** म.सा., पू. आ. श्री **नररत्नसू.** म.सा., पू. आ. श्री **रत्नाचलसू.** म.सा., पू. मु. श्री **शीलचंद्रवि.** म.सा., पू. मु. श्री **देवर्षिवल्लभवि.** म.सा., पू. मु. श्री **कीर्तींद्रवि.** म.सा., पू. मु. श्री **तीर्थयशवि.** म.सा., पू.मु.श्री **श्रुतांगचंद्रवि.** म.सा., पू.मु.श्री **सुयशचंद्रवि.** म.सा., पू.मु.श्री **भव्यसुंदरवि.** म.सा., पू.मु.श्री **विश्वचंद्रवि.** म.सा., पू.पं.श्री **हितरत्नवि.** म.सा., पू. **निरज मुनिजी** म.सा.(साधुमार्गी संप्रदाय), **श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर-कोबा**, तथा **किरीटभाई शाह** को हस्तलिखित प्रत संबंधी माहिती प्रदान करने का लाभ मिला।

प्राचीन श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए समुदार सहयोग देनेवाले महानुभाव

- **श्री माणेकचंद नेमचंद शेठ चॅरीटेबल ट्रस्ट,** मुंबई
- पू. आ. श्री **हेमप्रभसूरिजी** म.सा. और पू. पं. श्री **वज्रसेनविजयजी** म.सा. की प्रेरणा से **श्री हालारी विशा ओसवाल आदिजिन सेवा ट्रस्ट,** श्री आदिनाथ जैन मंदिर, पालिताणा
- **श्री अभयजी श्रीश्रीमाळ (जैन)** (अभुषा फाउंडेशन, चेन्नई)
- **श्री आर्यनभाई बी. शाह**
- **श्री जवाहरनगर जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ,** गोरेगाव, मुंबई
- पू. सा. श्री **उद्योतदर्शनाश्रीजी** की प्रेरणा से **गिरनार टावर, श्राविका संघ, चेन्नई**
- पू. आ. श्री **यशोविजयसू.** म.सा. व पू. आ. श्री **मुनिचंद्रसू.** म.सा की प्रेरणा से **श्री परमजिन भद्रशांति श्वे. मू. जैन संघ,** पाल, सुरत
- **श्रीमती दीप्तिबेन अमरचंदजी मेहता,** नागपुर
- **श्री मोहनभाई मूळजी,** मुंबई
- **श्री शत्रुंजय दर्शन जैन संघ,** एकबोटे कॉलनी, पुणे
- **भारती मोतिलाल जैन**
- **सौ. कविताबेन रितेशभाई कोठारी**
- **अमृतबेन चंपकभाई गाला, श्री जतीनभाई चंपकलाल गाला,** मुंबई
- **श्री आर्जव दीपकभाई महेता** परिवार, पुणे

प्रतिभाव

आप के द्वारा प्रेषित सूत्रकृतांग पदार्थ संग्रह तथा अनुयोगद्वार पदार्थ की नोंध मिली। श्रमण संघ में पिछले कुछ एक वर्षो से आगम का अभ्यास स्वाध्याय करने की परंपरा प्रायः लुप्त हो गई है। सभी न्याय-दर्शन-साहित्य के ग्रंथों का अभ्यास करने में परिश्रम ले रहे है। यह एक अच्छी बात होते हुए भी आगम अभ्यास के अभाव में त्याग-वैराग्य में अभिवृद्धि नहीं दिख रही है। ऐसे समय में नये युवा साधु-साध्वीजी को इस दिशा में आगे बढने के लिए इन दोनो आगमों का पदार्थ संग्रह बहुत ही उपयोगी साबित होगा। यह पदार्थ संग्रह छोटी पुस्तिका रूप में प्रगट हो तो उसकी कायमी मूल्यवत्ता बढेगी। इस प्रकार के सार संग्रह से स्वाध्याय और अध्ययन की परंपरा का संवर्धन होगा। आपका परिश्रम निश्चित ही सफल होगा।

-डॉ. जितेंद्र बी. शाह

सुवाक्य

आज, विशेष रूप से यदि जैन दर्शन जीवित है, तो यह एक श्रुत के कारण है, और यदि श्रुत जीवित है, तो यह ज्ञान भक्ति के कारण है। आगम शास्त्रों की प्रतिष्ठा भगवान की प्रतिष्ठा का एक हिस्सा है।

-श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई

Printed Matter

Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From : Shrutbhavan Research Centre

(Initiation of Shrutdeep Research Foundation)

47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046

Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org

For Informative and Inspirational speeches about Shrut please subscribe our Shrutbhavan YouTube channel